प्रदर्शनी करने। कहाँ? गवर्नर के बंगले में एकदम। एक दफा देखा है तो उनको पसंद आया। तो फिर बोला– भले गवर्मेण्ट हाउस में भी करो तो देखो कितना अच्छा होगा! कितना ब्रह्माकुमारियों का नाम बाला होगा कि आजकल गवर्मेण्ट हाउस में भी इनकी प्रदर्शनी हो रही है। तो सबसे जास्ती भभके से करनी चाहिए। ये भी तुमको भेज देंगे। देखा है तुमने ये लक्ष्मी–नारायण का चित्र? (किसी ने कहा– आज ही देखा है) आज ही देखा है, देखो। (किसी ने कहा– बहुत अच्छा है) मेरे पास (...), अभी ये बनाया तो अच्छा है, ... दिखलाई; परन्तु दाम बहुत खर्च कराया है। ये 800 रुपया खा गया। नहीं तो मैंने एस्टीमेट(आँकड़े) किया कि बहुत–बहुत–बहुत 300 रुपये से जास्ती नहीं खाना चाहिए। बॉम्बे का शहर है ना बच्चे। खाली इनका जो ये पिछाड़ी का लकड़ी का टुकड़ा/कबर्ड बनाया है, 300 रुपया। ...फिर कोई–2 बच्चे अमेरिकन पैसेंजर भी होते हैं। ठोंको। बुद्धि नहीं है व्यापारपने की। तो मेरा ख्याल था, अगर ऐसी प्रदर्शनी बने। 3–3 सौ रुपया एक–एक चित्र का, 6×4 का, तो 15 चित्र बने अच्छे फर्स्ट... 5000 रुपया खा जाएँगे। तो मैंने एस्टीमेट दिया था कि हम बनाय सकते हैं; परन्तु इतना दाम 800 रुपया, भई क्या खर्च करेंगे! वो कोशिश कर रहे हैं। दिल्ली में भी कोशिश कर रहे हैं। दिल्ली को खुरखा करेंगे या कुछ। है नहीं, कोई अक्लमंद नहीं है वहाँ। देखो, भारत में कितने अक्लमंद हैं। कौरव गवर्मेण्ट में ये अक्ल नहीं है राजधानी पाने का, बाकी सब अक्ल अच्छा है। फुर्त भी हैं, चुस्त भी हैं, सब बातें हैं उनमें। यहाँ फिर सिर्फ ज्ञान है, बाकी कुछ नहीं है। बाकी देखो, कैसे–2 बैठी हैं बुड्ढियाँ बिचारी! इनको भगवान पढ़ाय रहे हैं। ऊँचे–ते–ऊँचा भगवत, फिर ऊँचे (ते) ऊँचा है प्रजापिता ब्रह्मा और भगवान ये धंधा यहाँ बैठ करके, पतितों को बैठ करके पावन बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। तो मुट्ठे पतित से पावन बनते ही नहीं, मुट्ठे घड़ी–2 गिर पड़ते हैं। बाप को याद ही नहीं कर सकते हैं। ऐसे माया ने बेहोश कर दिया है। तो ये बरोबर है ना कि बंदर–हनुमानों ने बूटी लाई। वास्तव में हो तो तुम सभी हनुमान ना, जो बूटी लाई है सूरजीत करने की। भारत खास और सारी विश्व आम। तो ये बूटी है ना। इसको कहा जाता है–संजीवनी बूटी। समझा ना! ये जो मन्मनाभव मद्याजीभव, ये है संजीवनी बूटी और तुम सभी हो महारथी हनुमान। अभी हनुमान बन रहे हो। अभी पक्के नहीं बने हो जो माया हिलाय तो न सके। नहीं, अभी तो ऐसे कच्चे हैं, माया थोड़े ही ऐसे इशारा करके, उफऽऽऽऽ! तो गिर पड़ते हैं, डर पड़ते हैं। ऐसे कमज़ोर हैं। माया करे फूऽऽऽ, बिचारे झुक जाते हैं। अभी इनको माया को जीतने का है। सो भी इन–2 ऐसी–2 बुड्ढियों को जीतना है, सिर्फ कैसे? बस, जो इंजाम(अंजाम) किया है भक्तिमार्ग में आधाकल्प, बाबा याद दिलाते हैं कि आज भक्तिमार्ग में तुम बच्चों ने ये जन्म–जन्मांतर– .. बाबा, आप जब आएँगे तो बस आपके ही बनेंगे, दूसरा न कोई। अभी जब कहता हूँ– बस, शिवबाबा को याद करो। बस, दूसरे कोई को याद न करो। तो घड़ी–2 कर(...)। जानते हैं कि अंत में आय करके याद करते–3 सफलता को तो पाएँगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो बहुत अच्छा पुरुषार्थ करेंगे वो ऊँचा पद पाएँगे। बाप तो चाहेगा ना कि मेरे मीठे बच्चे मेरे को फॉलो करें, राजा ज़रूर बनें, महाराजा ज़रूर बनें। प्रजा क्या..... ये तो लज्जा आ जावे; क्योंकि यहाँ बच्चे कहते हैं कि हम महाराजा–महारानी बनेंगे। थोड़ा ही रोज़ के बाद जब समय आएगा, साक्षात्कार की भी चटपटी लगेगी, तो देखेंगे कितना हम तो बहुत ही

लास्ट जाकर प्रजा में पड़े हैं। तो फिर लज्जा आएगी और इतना टाइम मिलेगा नहीं जो याद में रहें अच्छी तरह से, सतोप्रधान बन जावें और फिर प्रजा भी बनाय जावें। पीछे टूलेट हो जाएगी ना और अभी है माया बिल्कुल मोहिनी। माया की देखो कितनी पॉम्प है! फैशन वगैरह आगे थोड़े ही थे। नहीं, आगे तो कपड़े से ऐसे आँखें ढक करके चलती थीं, कोई देखे नहीं और अभी तो इतना शृंगार करती हैं जो चलते–2 कोई उनको खराब कर देते हैं। चलते–2 एकदम खराब कर देते हैं। छोकरियाँ और इनको भी आ करके फैशन की आग लगी एकदम। तो फैशन की आग माना फिर काम की आग। खैंचते हैं ना पीछे। तो ऐसे जैसे कि ये कलहयुगी वैकुण्ठ हो पड़ा है। वो है सतयुगी वैकुण्ठ, ये है कलहयुगी वैकुण्ठ पर। तो कलहयुगी वैकुण्ठ तो खतम ही होने का है। ये तो पॉम्प है इतनी बड़ी। बाकी ये भी बिचारा, ये तो ज़रूर है कि अगर अच्छी तरह से समझ गए गवर्नर, प्रजा में तो आएँगे। देखो, बाबा कहते हैं ना, बहुत साहुकार, बड़े–2 एकदम, वो वहाँ जा करके गरीब प्रजा में बनेंगे और ऐसी–2 जो हमारी बुड्ढियाँ मम्माएँ हैं और जो बूढ़े–2 बिचारे बच्चे हैं गरीबवान, वो साहुकार बन जाएँगे। तो गवर्नर को भी अच्छी तरह से कोई समझावे और ये अच्छी तरह से इस तरफ में लग जावे, तो बहुत नामाचार कि वाह! ब्रह्माकुमारियों ने गवर्नर को भी जादू लगाय दिया। अभी है ज़रूर, कहेंगे बहुत कि ये गवर्नर को जादू लगा हुआ है। ये उनको भी कोई कहेंगे कि क्या फलाना तुमको भी कोई ब्रह्माकुमारियों का जादू लग गया है? वो तो बड़ी जादूगरनियाँ हैं। तो वहाँ सर्विस भी अच्छी करनी होगी। बाबा सबको डायरैक्शन्स देंगे। जगदीश का कोई हर्जा नहीं है। वो नहीं होगा तो कोई परवाह नहीं है। ऐसे बच्चे बहुत हैं जो तुम्हारे ..... को मदद करेंगे। अमृतसर में सिक्ख लोग हैं जास्ती और वो हैं थोड़े–बहुत। और इतनी कोई हैं नहीं, साधारण हैं, गरीब और साधारण बिल्कुल। और फिर दूसरा धर्म जहाँ–2 होते हैं, मुश्किल होते हैं। आजकल धर्म की भी आग लगी है ना एक/दो की। अगर देखो, महाराष्ट्रा–मैसूर ये देखो लड़ते हैं पानी के लिए, गाँवड़े के लिए। तो हर एक अपनी ....., सिक्ख भी लड़ करके अपना ले लेते हैं। तो ऐसे मत समझो, वो बहुत उनमें भी ऐसे ही होगा कि सब अच्छे–2 जो पोजीशन्स होंगे, वो सब सिक्ख को देते रहेंगे हमजिन्स की। अभी तुम बच्चों को भी अपने हमजिन्स (...), हम ब्राह्मण हैं, हमको तो बहुतों को ब्राह्मण बनाना पड़े, तो वो बिचारे देवता बन जाएँ। इसलिए इतनी जो प्रदर्शनियाँ करते हो इसमें कि शूद्र से ब्राह्मण बन जाएँ और शिवबाबा से वर्सा ले लेवें। तो प्रदर्शनी में जा करके हमेशा ये ज़रूर समझाना है कि ये है शिवबाबा, मानते हो? ये प्रजापिता ब्रह्मा। भले इनको छोड़ दो, प्रजापिता ब्रह्मा को तो मानते हो। तो दो पिताएँ हो गए। वो बाप, ये दादा। देखो, ये तारे भी तो ऐसी आती हैं और हम भी अपन को शिववंशी ब्रह्माकुमार, तुम बच्चे भी शिववंशी ब्रह्माकुमार। अभी शिवबाबा को ब्रह्मा द्वारा ज़रूर पढ़ाना है।... तो हम देखो कुमार और कुमारियाँ, ये कोई आर्टीफिशियल तो हो नहीं सकते हैं। हम बैठ करके पढ़ते हैं और बाप से अभी वर्सा लेते हैं। हर 5000 बरस बाप से वर्सा लेते हैं। हम जब वर्सा लेकर पूरा करते हैं तो विनाश शुरू हो जाता है; क्योंकि हम देवी–देवताओं को फिर सतयुग में ही आना है। ये तो कलहयुग है ना। ये देवी–देवता सतयुग में राज्य करते हैं ना। तो लिखा हुआ है ना– देखो, इस तरफ में कलहयुग, इस तरफ में सतयुग। इस तरफ में 500 करोड़, इस ओर में 10 लाख आदमी। तो ये विनाश होगा। तो

ये एक महाभारत की लड़ाई, दूसरा कोई ख्याल करे– कभी कोई ऐसी लड़ाई लगी है। अभी कल की लड़ाई, ये 5000 बरस के बाद फिर से लग रही है, लगेगी भी ज़रूर, कितना भी कोई मत्था मारे। तो जो–2 आएँगे समझने के लिए, उनमें जिन्होंने समझा होगा, वो कुछ–न–कुछ समझते जाएँगे। प्रजा बहुत बनेगी। भले आएँगे, साहूकार भी आएँगे, बड़े पोजीशन ... बनेंगे गरीब। समझ तो जाएँगे ना बच्चे। तो देखो, इतने बड़े–2 साहुकार, एम०एल०ए० फलाना, एम०पी० वगैरह बहुत साहुकार भी आएँगे; क्योंकि फिर भी तो गवर्नर के बंगले में आते हैं ना और गवर्नर को भी ऐसा है कि उनको अच्छी तरह से पढ़ाय–2 करके, अभी आप भी बैठ करके समझाना। सर्विस करेंगे, शिवबाबा आपके ऊपर भी राज़ी रहेंगे। वो भी खड़ा हो करके अगर समझाने लग पड़े तो तुम्हारा एकदम, बाबा कहेंगे नम्बरवन। जिसको बाबा कहते हैं अभी थोड़ा कम है, वो नम्बरवन चला जाएगा। हो सकता है, कोई बड़ी बात नहीं है। उनको कोचिंग देनी चाहिए बहुत, अच्छी तरह से। सो भी त्रिमूर्ति के ऊपर खास। ये बाबा है, ये दादा, ये है वर्सा। ये मिला हुआ था 5000 बरस। फिर ये सीढ़ी को देखो, उतरे हैं 84 जन्म। अभी फिर देखो हम योग में बैठे हैं, आप भी अभी प्रैक्टिस करो, घर बैठे ही गृहस्थ–व्यवहार में रहते हुए ये योग सीखो। बस, बाप ब्रह्मा द्वारा या ब्राह्मणों द्वारा (...)। आप भी ब्राह्मण। ब्राह्मण तो सभी हैं ही; क्योंकि जब रचना रची है भारत में, जब शिवबाबा आया हुआ है, तो ज़रूर ब्रह्मा द्वारा ही आ करके समझाया है। ये ज्ञान सिखलाया है ब्रह्मा द्वारा; क्योंकि पहले ब्राह्मण चाहिए। ये वर्ण का भी चित्र ज़रूर होना चाहिए। वो भी साथ में रखा हुआ हो। न बना हुआ तो बोलते जाना। बना होगा ज़रूर। नहीं तो बनाने में क्या है, ये 3/4 रोज़ में एक बन जाते हैं। इंगलिश और हिन्दी में। खास हिन्दी तो ज़रूरी ही है। फिर भी आजकल इंगलिश बहुत पढ़ते हैं; परन्तु हिन्दी ठीक है। यू०पी० उर्दू है। (किसी ने कहा– यू०पी० हिन्दी) हिन्दी ना (किसी ने कहा– उर्दू है) उर्दू ना। तो हिन्दी ठीक है। सबसे पहले नम्बर में बाबा इनको लिखेंगे– प्रदर्शनी की नम्बरवन प्रिफरेन्स लखनऊ को दो। कोई भी हालत में, मैं मुरली में भी लिख दूँगा कि फलानी तारीख एक दिन आगे (किसी ने कहा– 18 तारीख) कभी(कब) है? (किसी ने कहा– 20 तारीख है) 20, 18 तारीख को वहाँ (किसी ने कहा– 18 तारीख तक पहुँचेंगे) आ करके; क्योंकि एक दिन तो ले लेंगे पहले सजाने के लिए। कोई उनकी चीज़ें खराब नहीं होनी चाहिए। हाल है क्या? (किसी ने कहा– हाँ, इनसे भी बड़ा हाल है) इनसे तो बड़ा होगा ज़रूर। (किसी ने कहा– ऑल राउण्ड गैलरी है) ऑल राउण्ड, फिर ऊपर में गैलरी भी है। (बहन ने कहा– ऊपर में भी है, नीचे भी है। हाल की जैसे ये हमारा गैलरी/वरामदा है ना) उसको वरामदा (बहन ने कहा– उसको वहाँ गैलरी कहते हैं) उसको गैलरी कहते हैं। गैलरी तो ये होती है ना। जो अंदर होती है उसको गैलरी कहते हैं। (बहन ने कहा– ऊपर भी है) गैलरी भी है? (बहन ने कहा– है और नीचे भी सारा है) अभी गैलरी में कोई सुनने का तो है नहीं। प्रोजेक्टर होवे तो बैठ करके सुनें। सो भी गैलरी में नहीं ..... सुन सकें। हाँ, वहाँ भाषण सुन सकते हैं। अच्छा, ठीक है। है ही पहले परिचय ना। प्राचीन में भी कहते हैं कि आगे भी नेती–2 करते गए कि हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं। अभी तुम कहते हो कि जब तलक बाप न आएँ, रचता और रचना की पहचान कौन देवे। तो अभी तो बाप तुम बच्चों को (...), जो और तो कोई दे ही नहीं सकते हैं। तो इनकी मालूम पड़े। बाबा फिर टैलीग्राम भी करेंगे। विश्वकिशोर को बोल दो। अभी तो टाइम पड़ा है 20,25,30। कितनी तारीख है? (किसी ने कहा– 20,21,22) 20,21,22, आज क्या

तारीख है, 26? ...दिन पड़े हैं। जाँच करें, कहाँ–2 प्रदर्शनियाँ हैं? ...कभी(कब) है? (किसी ने कहा– 16 तारीख) ...पिछाड़ी कर देवें और ही। (बहन ने कहा– चंद्रमा (ने) लिखा था हमने बुकिंग करा दिया। हमारी चेंज नहीं हो सकती है।) हाँ। अच्छा, वहाँ भी पूरावा कर देंगे। बच्चे तो बहुत ही हैं। बॉम्बे की भी जाँच करनी पड़ेगी। ...ये तो है ना– हम क्या कर रहे हैं। हाँ, अपनी युक्ति से, जो भी हमारे थे ब्राह्मण, जो इस समय में शूद्र सम्प्रदाय में मिक्सअप हो गए हैं, वो निकलने के हैं। तो ये तो बड़ी मुश्किलात की बात होती है ना सैपलिंग लगाना। इतने सभी झाड़ों में से ये ब्राह्मण निकल आवें, एक–एक निकल आवे, ये भी कितना डिफीकल्ट बात है। वो जो धर्म स्थापन करते हैं, वो तो खुद आया और उसके पीछे दूसरा आते रहेंगे। उसमें तो कुछ बात ही नहीं। न कोई ज्ञान, न उनको गुरु भी कहा जाता है। वो हैं धर्म स्थापक। गुरु होते हैं सद्गति के लिए। तो वो सद्गति..किसको देगा। सद्गति के लिए एक ही गुरु चाहिए। अच्छे–2 तुमको रखना पड़ेगा। नहीं तो थर्ड–सेकण्ड क्लास प्रदर्शनी में इतनी कुछ टेस्ट नहीं करते हैं। ..... अभी तो पटना वाले खास हैं। 6/7 बरस हुए चार्ट। (किसी ने कहा–9...) 9 बरस में एक भी जगह नहीं है पूरा जो सेन्टर सम्भाल सके। 9 बरस में! क्या कहें उसको! मगध देश कहें, क्या कहें, पता नहीं मगरमच्छ जैसे देश। कि 9 बरस में कोई भी माताएँ या पुरुष ऐसे नहीं निकले हैं जो मुरली पढ़ करके, बैठ करके, सुना कर थोड़ा विस्तार से समझावे। इतना नहीं सीखे हैं एकदम। तो ये कहा जाता है ना पत्थरबुद्धि। ...याद नहीं करते हैं, तो जो आत्मा है, वो जो बुद्धि है आत्मा की, जो पत्थरबुद्धि है, सब प्योर नहीं होती है। तो धारणा नहीं हो सकती है। उसमें बच्ची कोई भी शक नहीं है। जो आते थे, ...सीखे, ये चले गए, प्रजा में तो आ जाएँगे। पर बाप आए और बाप–माँ, मम्मा–बाबा आप जगाएँगे तब आपसे सुख घनेरे लेंगे। तो घनेरे माना राजधानी लेनी चाहिए ना। घनेरे का ये अर्थ थोड़े ही है कि प्रजा में जाना है। नहीं बच्चे। नहीं तो कोशिश कर–करके, बाप से हिम्मत करके वर्सा लेना चाहिए और शिक्षा बिल्कुल सहज है। बहुत अति सहज शिक्षा है। सिर्फ अपन को आत्मा समझ करके और बाप का हम अभी बच्चे बने हैं, वो डिफीकल्टी होती है, घड़ी–2 भूल जाते हैं। घड़ी–2 देहअभिमान में, घड़ी–2 देहअभिमान में। अच्छा, चलो बच्ची! (म्युज़िक बजा) मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति, देखो बाप रूहानी कहते हैं ना। दूसरा कोई को अकल नहीं आवे, रूहानी बच्चा किसको कहा जाता है, क्या करते हैं। तो कोई अर्थ भी नहीं समझ सके कि ये रूहानी बच्चे क्यों कहते हैं और बाप कहते हैं मैं तो अपने बच्चों से बात करता हूँ, रूहों से बात करता हूँ। रूह ही सुनते हैं इन ऑरगन्स द्वारा और रूह के ही बुद्धि में बैठता है। कोई शरीर में नहीं बैठता है। नहीं, रूह के ही बुद्धि में ज्ञान; क्योंकि बाबा कहते हैं..मैं भी तो रूह हूँ ना। मेरे में ही तो ये सारा ज्ञान है ना, जो इन द्वारा बैठ करके समझाता हूँ। तो आत्मा में है ना बच्ची। आत्मा ज्ञान का सागर है ना। शरीर तो ज्ञान का सागर नहीं है। तो जैसे ये आत्मा ज्ञान का सागर है, तैसे तुम आत्माओं को भी ज्ञान का सागर बनाते हैं। ज्ञान का सागर भी बनाते हैं, पवित्रता का सागर भी बनाते हैं, प्यार का सागर भी बनाते हैं, शांति का सागर भी बनाते हैं और वहाँ चलेंगे तो सुख का सागर भी बनाते हैं। तो अच्छे–2 जो पुरुषार्थी बच्चे हैं, ऐसे रूहानी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट।